

## NEW TRENDS IN INDIA-RUSSIA STRATEGIC RELATIONS AND THEIR IMPACT ON INDIA'S SECURITY

### भारत-रूस सामरिक संबंधों में नए रुझान और भारत की सुरक्षा पर उनके प्रभाव

Sunit Kumar<sup>1</sup> and Dr. M.L. Jakar<sup>2</sup>

<sup>1</sup>Research Scholar Mansarovar Global University, Sehore (M.P)

<sup>1</sup>Faculty of Govt. College Timarni, Dist- Harda (M.P)

<sup>2</sup>Professor of Political Science, Mansarovar Global University, Sehore (M.P)

#### ABSTRACT

For a long time, the basis of India-Russia relations has been trust, consensus, equality, and shared interests in a worldwide framework. This brought them closer together, allowing them to team up on security, exchange, and innovation. Both New Delhi and Moscow had close ties after the breakup of the Soviet Union, but since Putin's arrival, relations have essentially improved. In addition to major partnerships, nations further united to promote systems for developed conscience, a multipolar world, counter-insurgency, environmental change, innovation and guard cooperation, and psychological warfare. Apart from this solid alliance and shared interests, India and Russia face various obstacles, especially considering the shifting of Asian political elements. The purpose of this study is to examine the historical background of the important India-Russia alliance with a focus on Putin's time. Common sense and equality, e.g.,

तबे समय से, भारत-रूस संबंधों का आधार विश्वास, आम सहमति और समानता, और विश्वव्यापी ढांचे में साझा हित रहे हैं। इसने उन्हें एक साथ करीब ले जाया, जिससे उन्हें सुरक्षा, विनिमय और नवाचार पर टीम बनाने की अनुमति मिली। सोवियत संघ के टूटने के बाद, नई दिल्ली और मास्को दोनों के बीच घनिष्ठ संबंध थे, फिर भी पुतिन की उपस्थिति के बाद से, संबंधों में अनिवार्य रूप से सुधार हुआ है। प्रमुख भागीदारी के अलावा, राष्ट्र आने विकसित विवेक, एक बहुधुवीय दुनिया, प्रति-विद्रोह, पर्यावरण परिवर्तन, नवाचार और गार्ड सहयोग, और मनोवैज्ञानिक युद्ध के लिए प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए एकजुट हुए। इस ठोस गठबंधन और साझा हितों के अलावा, भारत-रूस को विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है, खासकर एशियाई राजनीतिक तत्वों को स्थानांतरित करने पर विचार करना। इस अध्ययन का उद्देश्य पुतिन के समय पर ध्यान देते हुए भारत-रूस महत्वपूर्ण गठबंधन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का निरीक्षण करना है। सामान्य समझ और समानता, जैसे।

**Keywords:** मनोवैज्ञानिक युद्ध, सोवियत संघ, कूटनीति, बहुधुवीय विश्व।

#### प्रस्तावना

स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती वर्षों में, भारत कम्युनिस्ट गठबंधन की ओर झुका हुआ था। भारत के पहले प्रधान मंत्री, नेहरू, 1917 के रूसी विद्रोह से काफी प्रभावित थे, और आश्चर्यजनक रूप से कम्युनिस्ट मानकों को समायोजित करने के लिए देश की मौद्रिक रणनीतियों को बदलना चाहते थे। सतर वर्षों से अधिक समय से, दोनों के बीच संबंध आजमाए हुए और सच्चे और सुसंगत रहे हैं। दोनों ने एक-दूसरे के मूल्य को पहचाना है और विशिष्ट मौद्रिक, राजनीतिक और प्रमुख परेशानियों के प्रबंधन में इसे सार्थक माना है। भारत को सोवियत संघ से हवाई जहाज और हवाई-दावेदार मिले। 1970 से 1980 तक इस पर भी निशाना साधा गया। रूस ने हिंद महासागर में अपने झुकाव को मजबूत करने के लिए एशियाई सुरक्षा के विचार को आगे बढ़ाया। भारत और रूस दोनों के लिए 1971 की शांति, मित्रता और सहयोग की संधि एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। यह एक मिलीभगत थी जहां यह सहमति थी कि यदि किसी भी राष्ट्र पर हमला किया गया, तो आम बैठक पूरी हो जाएगी। इसने "स्थानीय सद्भाव के एक हामीदार के रूप में भरा" और साथ ही भागीदारी को उन्नत किया है। हो सकता है कि समझौते को एक और अनुवाद द्वारा प्रतिस्थापित किया गया हो, हालांकि इसकी विरासत भारत और रूस के विकासशील प्रमुख सहयोग के आधार पर बनी हुई है" (मोहंती, 2011)। 1980 के दशक के अंतिम

भाग में दिल्ली को अधिक प्रमुख किरम के मजबूत और परिष्कृत हथियार मिले।

सोवियत संघ की मृत्यु और उसके बाद सोवियत संघ के 15 अलग-अलग गणराज्यों में विभाजित होने से अव्यवस्था और उथल-पुथल मच गई। सोवियत संघ का प्रबंधकीय ढांचा लगभग गिर रहा था। इन परिवर्तनों ने अनिवार्य रूप से रूस के साथ भारत के आवश्यक संबंधों को प्रभावित किया। हालांकि, व्लादिमीर पुतिन के रूस के राष्ट्रपति चुने जाने के बाद चीजें काफी बदल गईं। पुतिन काल को रूस-भारत संबंधों में प्रगति के एक रनैपशॉट के रूप में वर्णित किया गया है। उनके निवास के बाद से भारत और रूस के बीच संबंध एक अलग दिशा में चले गए हैं।

#### विचार करने के लिए प्रश्न

1. भारत और रूस के बीच साझा हित और इच्छा के क्षेत्र क्या हैं?
2. मास्को-नई दिल्ली संगठन के खिलाफ कौन से बुनियादी मुद्दे चल रहे हैं?
3. भारत-रूस संबंधों के लिए भविष्य की पकड़ कैसी है?

#### अनुसंधान का महत्व

विश्वास, साझा व्यवस्था और समानता, और वैश्विक ढांचे में परस्पर विरोधी हित भारत-रूस प्रमुख संबंधों के आधार हैं,

जिन्होंने उन्हें सुरक्षा संबंधी विंताओं को दूर करने के लिए एकजुट किया है। पुतिन काल को रूस-भारत संबंधों में प्रगति के एक स्नैपशॉट के रूप में वर्णित किया गया है। उनके निवास के बाद से भारत और रूस के बीच संबंध एक अलग दिशा में चले गए हैं। प्रमुख भागीदारी के अलावा, राष्ट्रों ने आगे विकसित रणनीति, एक बहुध्रुवीय दुनिया, प्रति-विद्रोह, पर्यावरण परिवर्तन, नवाचार और गार्ड सहयोग, और मनोवैज्ञानिक युद्ध के लिए प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने के प्रयासों को संयुक्त किया। यह शो भारत-रूस संबंधों में असेम्बली के क्षेत्रों और बाधाओं का अंदर और बाहर निरीक्षण करके वर्तमान लेखन को एक और पहलू देगा।

### क्रियाविधि

समीक्षा व्यक्तिपरक और मात्रात्मक दोनों रणनीतियों का उपयोग करती है। इस काम की रचना के लिए विशेषज्ञ ने पुस्तकों, शोध डायरियों, पत्रिकाओं, लेखों और पत्रों से वैकल्पिक जानकारी का उपयोग किया। एक काल्पनिक प्रणाली के रूप में निर्भरता परिकल्पना को शामिल करते हुए, प्राप्त जानकारी का मूल्यांकन किया गया और अंत तैयार किया गया।

### सैद्धांतिक ढांचा

रास्ता निर्भरता एक मूल्यवान प्रणाली है जो स्पष्ट करने में सहायता कर सकती है कि क्यों। पिछले सत्र वर्षों के दौरान, भारत और रूस ने ठोस संबंध बनाए रखे हैं। यह दिखाता है कि वर्तमान विकल्प पुरानी जानकारी और अनुभव पर क्यों स्थापित हैं। इतिहास हमारी पसंद और फैसलों को प्रभावित करता है। जिस तरह से निर्भरता पहले की निर्भरता का सुझाव नहीं देती है; बल्कि, यह भविष्य के परिणामों का अनुमान लगाता है। जल्द ही, रूस और भारत के बीच गार्ड कनेक्शन सबसे महत्वपूर्ण होगा।

### साहित्य की समीक्षा

विश्वव्यापी ढांचे में विश्वास, सामान्य व्यवस्था और समानता, और परस्पर विरोधी हित भारत-रूस महत्वपूर्ण संबंधों के सुदृढीकरण हैं, जिन्होंने उन्हें सुरक्षा संबंधी विंताओं को दूर करने के लिए एकजुट किया है (स्टोबदान, 2010)। दिल्ली और मास्को के बीच आवश्यक संबंध भारत के सुरक्षा पहलू की विशेषता थी। संयुक्त राज्य अमेरिका और पाकिस्तान के बीच 1954 के गार्ड सहमति ने सोवियत संघ को भारत के साथ आवश्यक संघ बनाने का मौका दिया, जैसा कि ग्लोबल पॉलिटिकल रिव्यू (जीपीआर) द्वारा इंगित किया गया है। 1962 में एक निर्विवाद स्तर के सैन्य व्यापार के माध्यम से चीन-भारत संबंधों में अतिरिक्त सुधार हुआ (अचुथन, 2010)।

1962 में चीन-रूसी संबंध एक अप्रतिम निचले स्तर पर थे, और मास्को एक निकास योजना की तलाश कर रहा था। वैकल्पिक भारत सबसे अच्छा विकल्प था, और यह पूरी तरह से कमरे में फिट बैठता है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने किसी भी डेटा को साझा करने से इनकार कर दिया। भारत को जटिल हथियार मिले, और सोवियत संघ ने, अपने अंतरराष्ट्रीय कारणों से, छेद को भर दिया (निर्मला, 2001)।

सैन्य और प्रमुख सहयोग भारत-रूस संबंधों के सभी हिस्सों का समर्थन करता है। 1965 में पाकिस्तान और भारत के बीच संघर्ष,

अमेरिकी प्रतिबंधों की तरह, दिल्ली को आग्नेयास्त्रों और सैन्य हार्डवेयर के मुख्य व्यापारी में बदलने का मौका मिला (तातियाना, 2010)।

### भारत-रूस संबंधों में अभिसरण के क्षेत्र

#### मल्टी चुम्बकत्व

भारत और रूस का विश्वव्यापी सद्भाव और सुरक्षा को आगे बढ़ाने के लिए सहयोग करने का एक लंबा इतिहास रहा है। ब्रिक्स, एससीओ और जी20 जैसी दुनिया भर में और प्रांतीय सभाओं के माध्यम से, वे दुनिया भर में अवैध धमकी, सीरियाई आपातकाल, मादक द्रव्यों के हथियार और पर्यावरण परिवर्तन जैसी निचोड़ने वाली विंताओं को दूर करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ अपनी सभा के बाद, नरेंद्र मोदी ने व्यक्त किया, "भारत और रूस महसूस करते हैं कि बहुध्रुवीय दुनिया और बहुध्रुवीय संबंधों को मजबूत करना अनिवार्य है।"

मई 2018 में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के बीच सोची उच्चतम बिंदु के बाद, दोनों प्रमुखों ने एक ठोस बहुध्रुवीय दुनिया के लिए सहयोग करने की कसम खाई, "और एक बहुध्रुवीय विश्व अनुरोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर समझौता किया" (हिंदुस्तान टाइम्स, 2018)।

#### इंडो-पैसिफिक में रुचियों का निर्माण

प्रारंभ में, इंडो-स्पेसिफिक एक स्थलाकृतिक विचार था जिसने दो प्रशांत और हिंद महासागर क्षेत्रों को संबोधित किया। यह एक मूल विचार है, फिर भी कुछ प्रमुख राष्ट्रों के बीच भू-रणनीतिक लड़ाई के कारण उन्नत समय में इसका महत्व भर गया है। गुरूप्रीत एस. एक समुद्री रणनीतिज्ञ और नई दिल्ली नेशनल मरीन फाउंडेशन के प्रमुख सुरुना ने एक दशक पहले "इंडो-पैसिफिक प्रोसीजर" कहावत की शुरुआत की (गुरूप्रीत, 2018)। 2017 में, इंडो-पैसिफिक विचार ने पैर जमा लिया, और विभिन्न खिलाड़ी विभिन्न कारणों से जिले में प्रबलता के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। इस बात के बावजूद कि इंडो-पैसिफिक भारत के बजाय हिंद महासागर की ओर इशारा करता है, "भारत की नौकरी की ओर रुख किए बिना इंडो-पैसिफिक के बारे में विचार करना मुश्किल है" (द हिंदुस्तान टाइम्स, 2017)।

#### विनिमय और आर्थिक सहयोग

विनिमय और अर्थव्यवस्था के संबंध में, भारत और रूस एक मधुर संबंध में भाग लेते हैं। लंबी अवधि में विशेष रूप से पुतिन के प्रशासन के दौरान संबंध और विकसित हुए हैं। 2000 में भारत-रूस सामरिक साझेदारी पर घोषणा के अंकन के साथ, दिल्ली और मास्को के बीच आदान-प्रदान ने नई ताकत और महत्व हासिल किया।

2010 में, इस संघ को "असाधारण और विशेषाधिकार प्राप्त महत्वपूर्ण संगठन" में स्थानांतरित कर दिया गया था। कृषि, नींव, नैदानिक, परिवहन, और विज्ञान और नवाचार इन समझौतों में कल्पना किए गए संयुक्त प्रयास के क्षेत्रों में से हैं।

#### प्रौद्योगिकी और ऊर्जा

रूस और भारत अपने विशेष ऊर्जा उद्यमों को बनाने और सुधारने के लिए सहयोग कर रहे हैं। दोनों देशों ने हाल ही में ऊर्जा उपक्रमों में, विशेष रूप से ताप विद्युत, तेल और गैस के क्षेत्र में, बहुत बड़े पैमाने पर अभियान चलाया है। गार्ड के बाद, ऊर्जा विश्वव्यापी सहयोग के दूसरे सबसे बड़े क्षेत्र के रूप में उभरी है। थर्मल पावर क्षेत्र उनके संबंधों के मूल में है, खासकर जब से अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स ने 2008 में "विशेष" शील्ड व्यवस्था में भारत के प्रवेश का समर्थन किया, और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह ने भारत में परमाणु सामग्री के उत्पाद पर सीमाएं हटा दीं। अनुमानों के अनुसार, भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यालयों में वर्तमान 6.2 गीगावॉट (<http://www.world-nuclear.org>) से 2032 तक 63 GW की एक पूरी तरह से शुरू की गई सीमा होगी।

### भारत और रूस के बीच संबंध: चुनौतियों

#### पाकिस्तान-रूस संबंध को लेकर भारत में चिंता

पाकिस्तान और रूस के बीच संबंधों ने हाल ही में काम किया है, खासकर चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) की शुरुआत के बाद से। साझा हित और लक्ष्य रिश्ते का समर्थन करते हैं। रूस ने 2015 में पाकिस्तान को Mi-35 योद्धा विमान बेचने की सहमति दी और कहा कि यह "उत्तर-दक्षिण गैस पाइपलाइन परियोजना में \$ 2 बिलियन से जल जाएगा" (घनी, 2018)। 2018 की पहली छमाही में, पाकिस्तान और रूस के बीच एक्सचेंज में 82% का विस्तार हुआ, और "मास्को लाहौर और कराची के बीच 1.100 किलोमीटर की गैस पाइपलाइन में मदद कर रहा है" (जाफरी, 2018)। दोनों देशों द्वारा 2016 और 2017 दोनों में सैन्य अभ्यास किया गया था। अगस्त 2018 में, इस्लामाबाद और मास्को ने एक समझौता किया जिसके तहत पाकिस्तानी अधिकारियों को रूसी सैन्य नींव में तैयार किया जाएगा।

#### निष्कर्ष: एक भविष्यवादी दृष्टिकोण

#### सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. अच्युतन, एन.एस. (2010), "उत्तर-सोवियत सुरक्षा परिप्रेक्ष्य दक्षिण एशिया की ओर: एक ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक" सिंहावलोकन", भारत-रूस सामरिक साझेदारी: सामान्य परिप्रेक्ष्य, (नई दिल्ली, संस्थान का संस्थान) रक्षा अध्ययन और विश्लेषण: 98.
2. कशिशा, पी. (2018), "अफगानिस्तान में रूसी और अमेरिकी गतिरोधों के बीच भारत का संघर्ष" ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, 23 नवंबर
3. शौमयान, टी। (2010), "रूसी-भारतीय द्विपक्षीय सहयोग", भारत-रूस सामरिक साझेदारी: आम परिप्रेक्ष्य, (नई दिल्ली, रक्षा अध्ययन संस्थान)
4. राइस, कॉडोलीज़ा, 2006, "भारत के साथ हमारा अवसर", वाशिंगटन पोस्ट, 13 मार्च, पी. ए15.
5. रशियन फ़ेडरेशन, 1997, कॉटसेप्ट्सिया नत्सोनलनोय बेज़ोपासनोस्ती रोसिस्कोय।
6. बरुआ, अमित, 2004, "भारत, रूस बड़े तेल-गैस सौदों की योजना बना रहा है", द हिंदू, 14 नवंबर, <http://www.hinduonnet.com/thehindu/2004/11/14/> पर कहानियां/2004111405920100.एचटीएम (12 मार्च 2008 को अभिगमित)।